Roll No. : .....

Total No. of Questions : **13**] [Total No. of Printed Pages : **4**

A–226

B.A. (Part–II) Examination, 2022

HINDI LITERATURE

Paper - I

(रीतिकालीन काव्य)

*Time : **3** Hours*] [*Maximum Marks : **100***

खण्ड–अ **(अंक : 2 × 10 = 20)**

नोट :– सभी **दस** प्रश्नों के उत्तर दीजिए (उत्तर-सीमा **50** शब्द)। प्रत्येक प्रश्न **2** अंक का है।

खण्ड–ब **(अंक : 8 × 5 = 40)**

नोट :– आठ में से किन्हीं **पाँच** प्रश्नों के उत्तर दीजिए (उत्तर-सीमा **200** शब्द)। प्रत्येक प्रश्न **8** अंक का है।

खण्ड–स **(अंक : 20 × 2 = 40)**

नोट :– चार में से किन्हीं **दो** प्रश्नों के उत्तर दीजिए (उत्तर-सीमा **500** शब्द)। प्रत्येक प्रश्न **20** अंक का है।

खण्ड–अ

1. सभी **दस** प्रश्नों के उत्तर दीजिए (उत्तर-सीमा **50** शब्द) :

   (i) केशव रचित **दो** काव्य-संवाद लिखिए।

   (ii) ''जा तन की झाँई परै, स्यामु हरित दुति होय'' पंक्ति के तीन अर्थ लिखिए।

(iii) ''मन की प्यास प्रचण्ड न जाई'' रज्जब ने ऐसा क्यों कहा है ?

(iv) रीतिकाल को 'कलाकाल' नाम किसने दिया ?

(v) रीतिबद्ध काव्यधारा के **चार** कवियों के नाम बताइए।

(vi) रीतिकाल की प्रमुख काव्यधाराएँ कौन-कौनसी हैं ?

(vii) कवि भूषण ने किन **दो** राजाओं की प्रशंसा लिखी है ?

(viii) दोहा छन्द के लक्षण सोदाहरण लिखिए।

(ix) काव्य हेतु कौन-कौनसे होते हैं ? नाम बताइए।

(x) सेनापति की **दो** रचनाओं के नाम बताइए।

खण्ड–ब

नोट :– निम्नलिखित आठ पदों में से किन्हीं **पाँच** की सप्रसंग व्याख्या कीजिए (उत्तर-सीमा **200** शब्द) :

2. बानी जगरानी की उदारता बखानी जाय

ऐसी मति कहो धौं उदार कौन की भई।

देवता प्रसिद्ध सिद्ध ऋषिराज तपवृद्ध

कहि कहि हारे सब कहि न केहू लई।

भावी भूत वर्तमान जगत बखानत है

केशोदास केहू ना बखानि काहू पै गई।

वर्णें पति चार मुख, पूत वर्णें पाँच मुख

नाति वर्णें षट मुख तदपि नई नई।

3. मेरी भव बाधा हरो, राधा नागरि सोय।

जा तन की झाँई परै, स्यामु हरित दुति होय॥

तो पर वारौ उर बसी, सुन राधिके सुजान।

तू मोहन के उर बसी, ह्वै उरबसी समान॥

बतरस लालच लाल की, मुरली धरी लुकाय।

सौंह करै भौंहनि हँसे, देन कहे नटि जाय॥

4. सपने में देखन ही सुनि, नाचत नन्द यसोमति को नट।

वा मुसक्याई के भाव बताई के, मेरोई खेचि खरो पकरो पट।

तौ जागि गाय रंभाई उठी, कवि देव वधूनि मथ्यो दधि को घट।

चौंकि परी तब कान्ह कहूँ न, कदम्बन कुंजन कालिन्दी को तट।

5. राम को नाम जपो निसि बासर, राम ही को इक आसरो भारो।

भूलो न भूल की भीरन में, 'पद्माकर' चाहि चितौनि को चारो।

ज्यों जल में जलजात के पात, रहै जग में त्यों जहान तें न्यारो।

आपने सो सुख और दु:ख दौरि जु और को देखै सु देखन हारो।

6. ऊँचे घोर मंदर के अन्दर रहनवारी, ऊँचे घोर मन्दर के अन्दर रहाती हैं।

कंद मूल भोग करैं, कंद मूल भोग करैं, तीनि बेर खाती ते वै तीनि बेर खाती हैं।

भूषन सिथिल अंग, भूषण सिथिल अंग, नगन जड़ाती ते वै नगन जड़ाती हैं।

भूषन भनत शिवराज वीर तेरे त्रास, बिजन डुलाती ते वै बिजन डुलाती हैं।

7. अति सूधो सनेह को मारग है, जहँ नेकु सयानप बाँक नहीं।

तहाँ साँचे चले तजि आपुनपौं, झिझकैं कपटी जे निसांक नहीं।

घन आनन्द प्यारे सुजान सुनो, इत एक ते दूसरो आँक नहीं।

तुम कौन धौं पाटी पढ़े हो लला, मन लैहु पै देहु छटांक नहीं।

8. बीती ताहि बिसारि दे, आगे की सुधि लेइ।

जो बनि आवै सहज में, ताही में चित्त देइ।

ताही में चित्त देइ बात जोई बनि आवै।

दुर्जन हँसे न कोय, चित्त में खता न पावै।

कह गिरधर कविराय, यहै करु मन परतीती।

आगे को सुख होय, समझु बीती सो बीती॥

9. गुरु प्रसाद अगम गति पावै, पलटै जीव ब्रह्म ह्वै जावै।

हरि भृंगी गुरु डंक समान, मारत तन में भयेजु प्राण।

चन्दन राम गुरु गति बास, भैदे नहिं बना दास।

ब्रह्म सूर गुरु किरण प्रकास, रज्जब जीव जल सरिस अकास।

खण्ड–स

नोट :– निम्नलिखित में से किन्हीं **दो** प्रश्नों के उत्तर दीजिए (उत्तर-सीमा **500** शब्द) :

10. ''बिहारी सतसई में शृंगार, भक्ति और नीति की त्रिवेणी प्रवाहित हुई है।'' इस कथन की युक्तियुक्त पुष्टि कीजिए।

11. सिद्ध कीजिए कि भूषण वीर रस के अप्रतिम कवि हैं।

12. रज्जबदास जी की भक्ति भावना पर एक निबन्ध लिखिए।

13. रीतिकाल की परिस्थितियों पर प्रकाश डालिए।

अथवा

काव्य हेतु किसे कहते हैं ? प्रमुख काव्य हेतुओं को सोदाहरण समझाइए।